# Metaphysics

## TDC PART-I

## PAPER-II

**Dr. Vijaya Kumar**

**Deptt. of Philosophy**

**L. S. College, Muzaffarpur**

तत्त्वमीमांसा

# तटस्थ-ईश्वरवाद

Deism

तटस्थ ईश्वरवाद ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण, चेतन, अनन्त, निरपेक्ष, पूर्ण तथा चिरंतन मानता है। ईश्वर ही संसार की सृष्टि करता है– किसी निश्चित समय में। अर्थात् कुछ समय ऐसा होता है कि सिर्फ़ ईश्वर ही रहता है, संसार नहीं रहता है और फिर एक ऐसा समय आता है कि ईश्वर की इच्छा होती है कि संसार का निर्माण करे और वह ऐसा कर डालता है। इसका मतलब यह नहीं है कि किसी खास समय में ईश्ववर को संसार की जरूरत होती है। वह तो पूर्ण है, उसे किसी चीज की जरूरत नहीं होती। वह अपनी स्वतंत्र इच्छा से अपने से अलग स्वतंत्र पदार्थों का निर्माण करता है।

ईश्वर की विशेषता इसमें है कि वह एक बार संसार का निर्माण कर देता है और उससे तटस्थ हो जाता है। उसके अन्दर रह कर उसका पालन, संचालन आदि नहीं करता। संसार को बनाते समय ही ईश्वर उसके भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों तत्त्व उसमें भर कर नियम संचालित कर देता है जिसके द्वारा संसार अपने आप संचालित होता रहता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार घड़ीसाज घड़ी बनाकर उसमें समय निर्धारित कर संचालित कर देता है और घड़ी चलती रहती है। उसी प्रकार ईश्वर भी संसार को बना कर उसे स्वतः चलने के लिए छोड़ देता है और हस्तक्षेप केवल उसी स्थिति में करता है जब उसमें कोई गड़बड़ी पैदा होती है।

तटस्थ ईश्वरवाद के कुछ मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं–

•ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण, अनन्त तथा पूर्ण है।

•वह विश्व का सिर्फ़ निमित्त कारण है, उपादान कारण नहीं।

•विश्व की सृष्टि निमित्त समय में हुई है।

•ईश्वर पूर्नतः विश्वातीत है, यानी संसार से परे अलग तथा तटस्थ है।

•संसार ईश्वर के द्वारा प्रदत्त शक्ति तथा नियमों के द्वारा स्वतः संचालित होता है।

•आवश्यकता पड़ने पर कभी–कभी ईश्वर संसार की क्रियाशीलता में हस्तक्षेप करता है।